BUBBLES
बुलबुलेः
एक झागदार
सनकी विज्ञान कथा
TABULA ROSETTANA
IN FORMA NARRATIONIS PICTAE
DE SCIENTIA DEMENTI EROTICA
लेखकः इयागो फॉस्टस
चित्रांकनः इरोसार्ट्स

ठक-ठक!
अंदर आ जाओ!

हाय, प्रोफेसर ओडबोल!

मुझे लगता है कि तुम सही समय पर आई हो। और साथ में एक दोस्त भी लाई हो।

प्रोफेसर ओडबोल, इनसे मिलिये, ये हैं मेरे बॉयफ्रेंड रॉकी अनविन।

उह, हैलो प्रोफेसर।

तो रॉकी, मेरी प्रयोगशाला में कैसे आना हुआ?

जी हां प्रोफेसर, जब बेकी ने मुझे बताया कि वह यहां पर किसी परमाणु प्रयोग पर काम कर रही है तो... आप समझ सकते हैं कि एक साथी को चिंता हो जाती है।

साबुन?
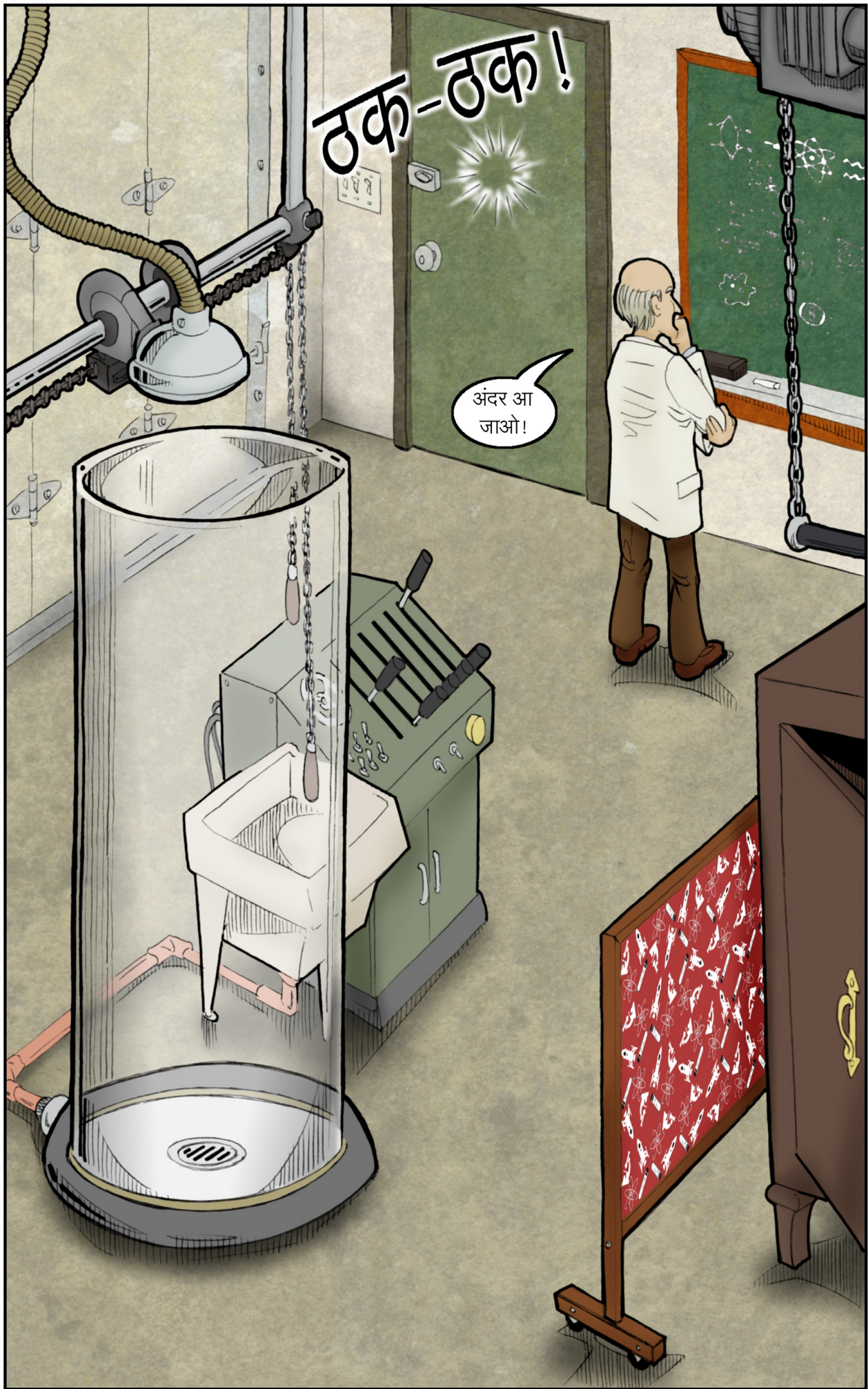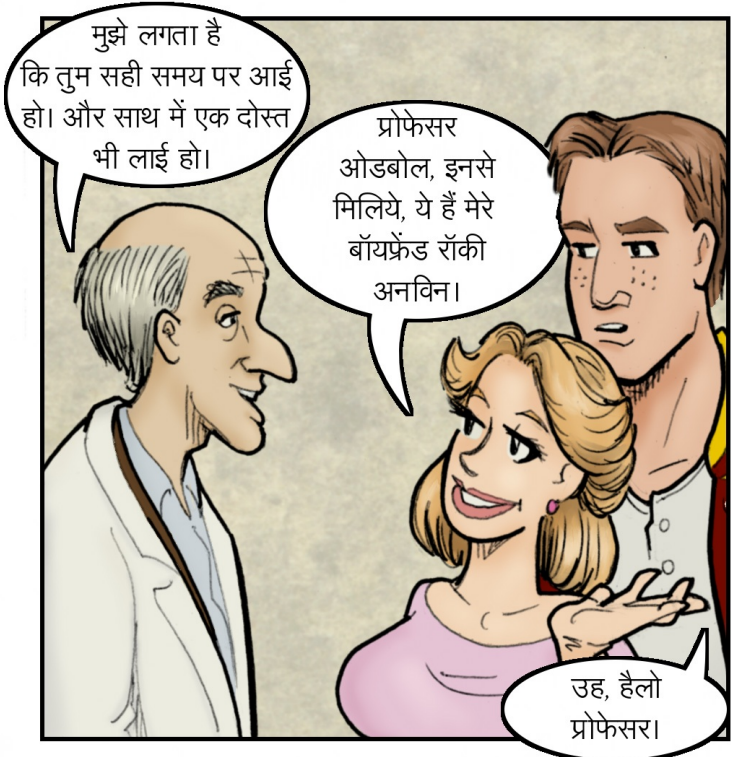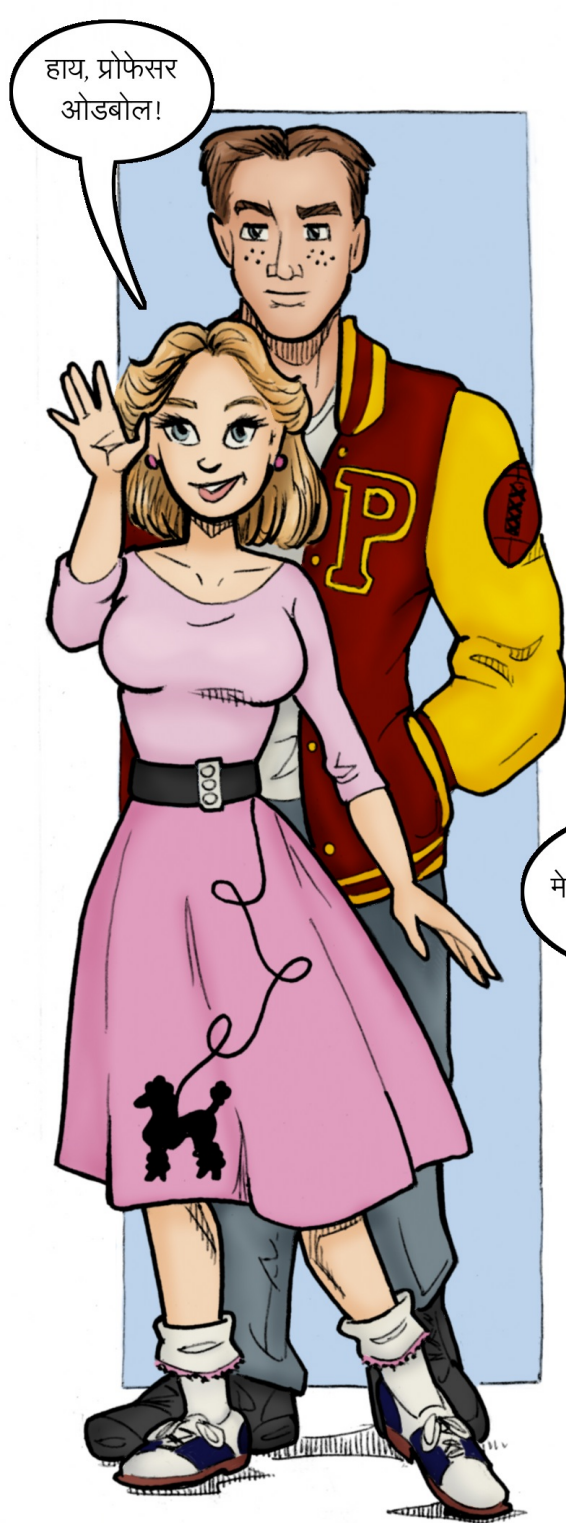
हां! परमाणु ऊर्जा के उपयोग के दौरान निकलने वाले कुछ अवांछित रेडियोएक्टिव कणों को साफ करने के लिए, जो खतरनाक हो सकते हैं।

हे भगवान, प्रोफेसर! क्या आप यह कह रहे हैं कि परमाणु ऊर्जा अपने आप में खतरनाक हो सकती है?

देखो रॉकी, कुल मिलाकर परमाणु हमारा दोस्त है। और इससे निकलने वाली परमाणु ऊर्जा के हजारों उपयोग हैं।
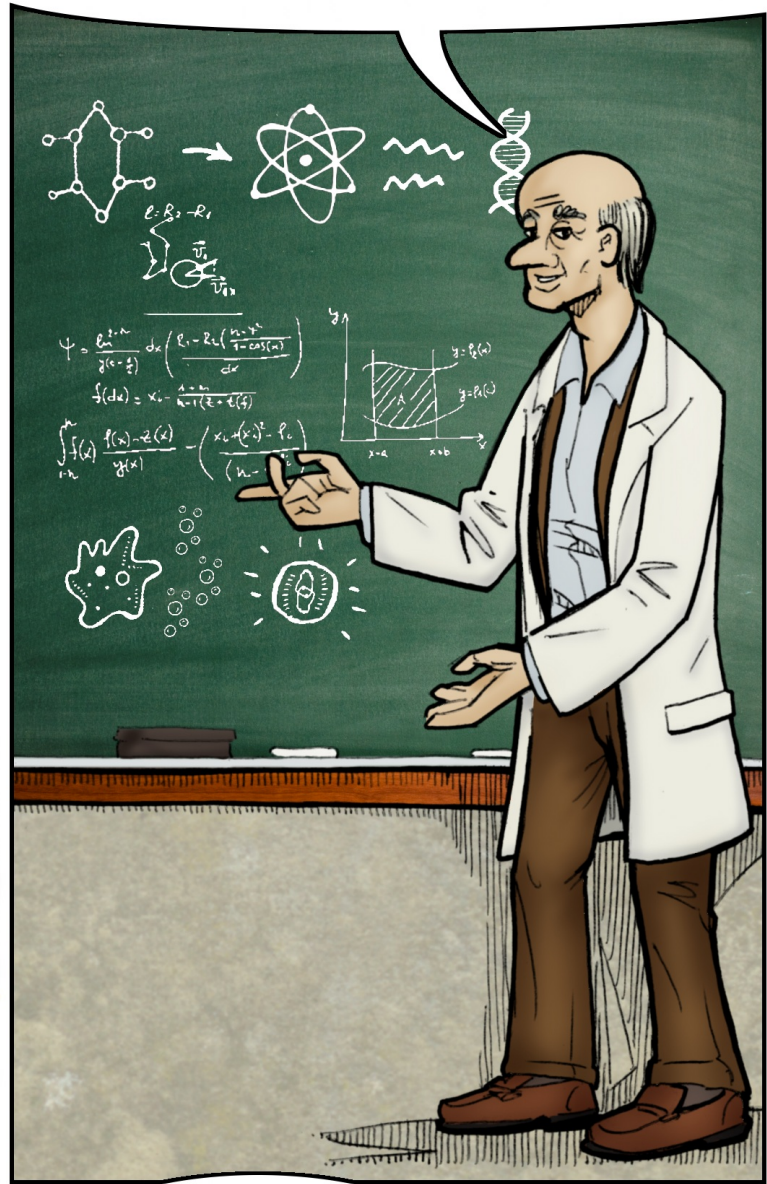
रेडियम पेंट, जिसके जरिए
आप अपनी घड़ी में रात में
भी समय देख सकते हैं...
...इससे बिजली भी बनती
है जो हमारे घरों में
आधुनिक सुविधाओं
के लिए जरूरी है...
...यह दूसरे ग्रहों की यात्रा पर जाने वाले हमारे
अंतरिक्ष यानों के लिए ऊर्जा का साधन है...
...आजाद दुनिया को साम्यवाद
की बुराइयों से सुरक्षा के साधन
देने में यह मददगार है...
...परमाणु ऊर्जा यह
सब कर सकती है!
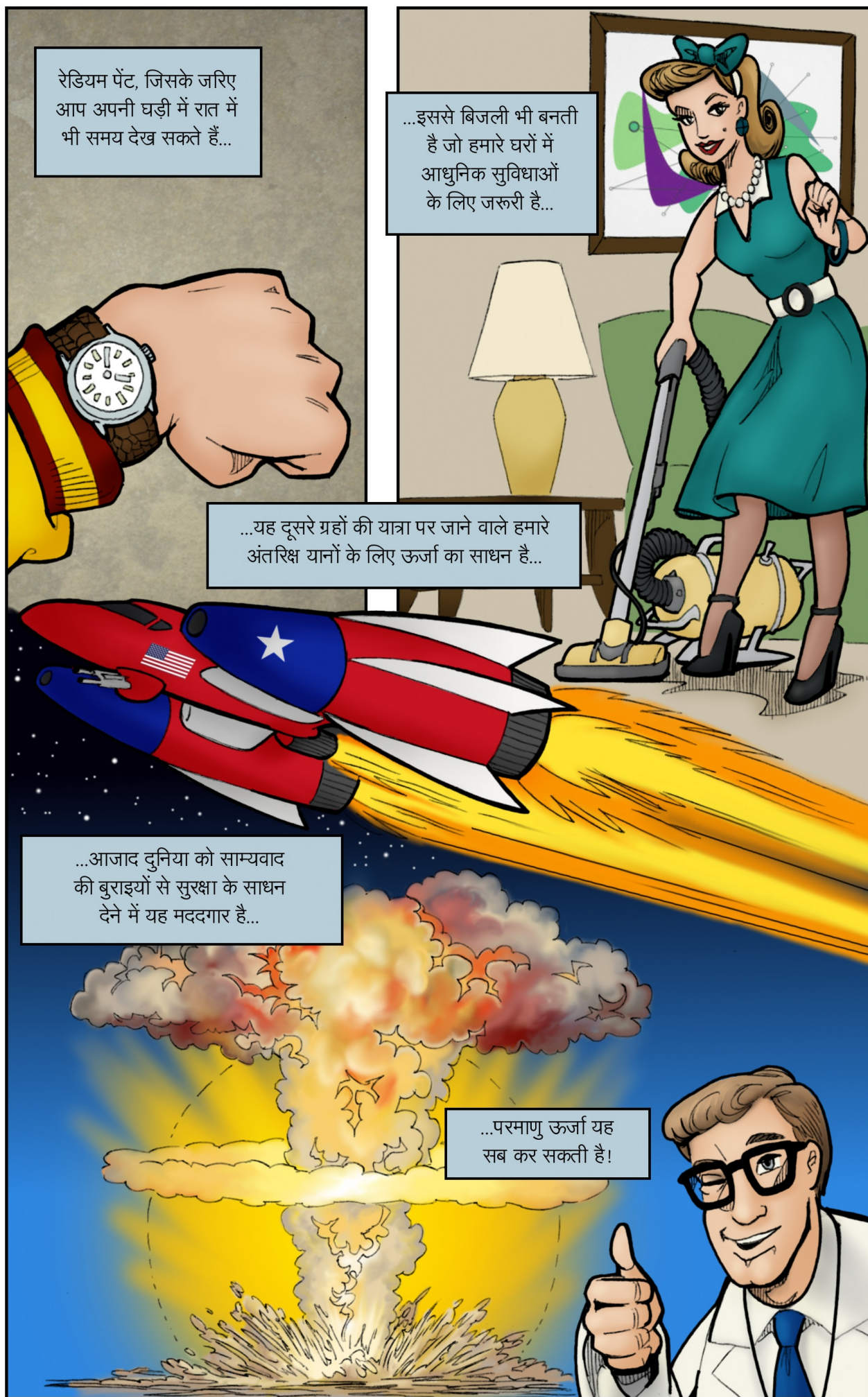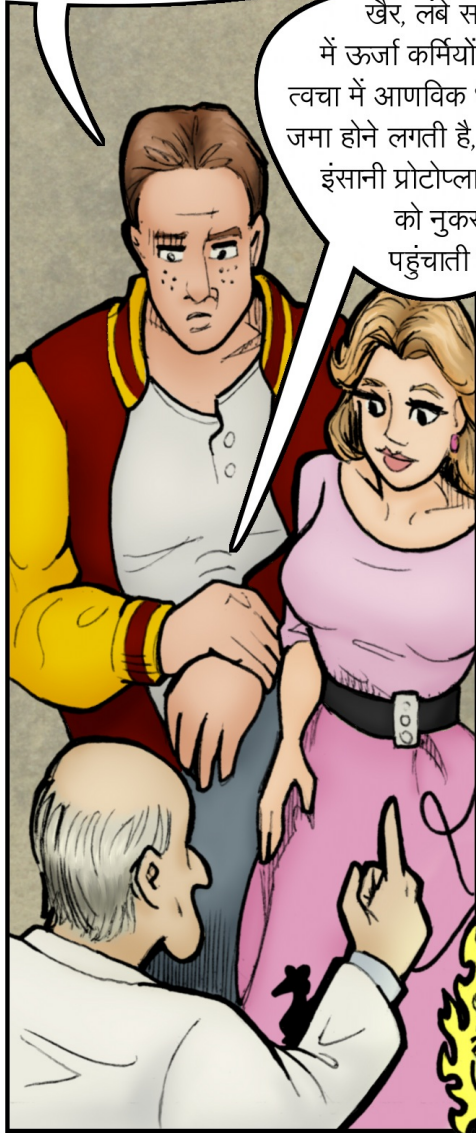
तो फिर दिक्कत क्या है, प्रोफेसर?
खैर, लंबे समय में ऊर्जा कर्मियों की त्वचा में आणविक धूल जमा होने लगती है, जो इंसानी प्रोटोप्लाज्म को नुकसान पहुंचाती है।
कई सालों में, ऐसे जमाव से गंभीर बीमारियां होने का खतरा हो सकता है।
कुछ विशेषज्ञों का अनुमान है कि ज्यादा लंबे समय तक एक्सपोजर आने वाली पीढ़ी में उत्परिवर्तिन के चलते दानव उत्पन्न कर सकता है!
और यहीं से मेरी खोज शुरु होती है...
...सिर्फ साबुन नहीं, बल्कि एक अंतरिक्ष युगीन रेडियो-एक्टिवेटेड हायपर-डिटर्जेंट!
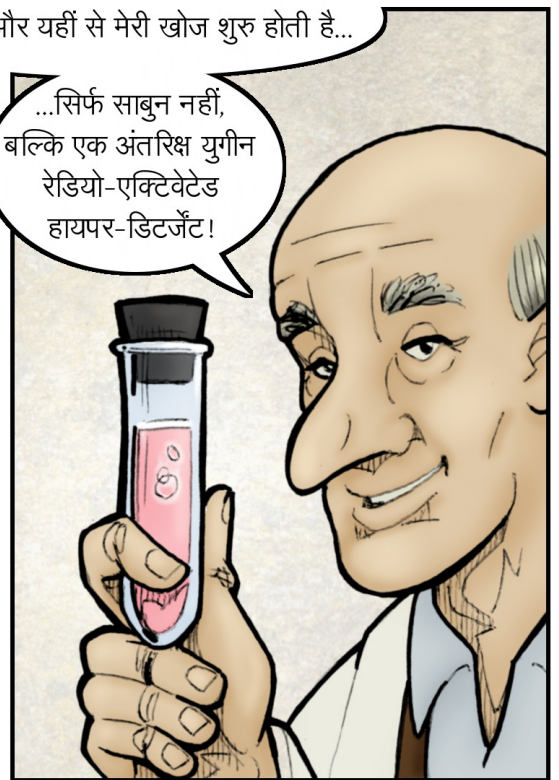
बेकी मुझे रिसर्च सब्जेक्ट के तौर पर मदद कर रही है। पिछले हफ्ते मैंने उसके पेट पर हानिरहित लेकिन पता चलने वाली मात्रा में रेडियो आइसोटोप्स पेंट कर दिए थे।
<खिलखिलाहट>

खट खट
खट खट
खिर्ररर...
देखा तुमने?

हां बेकी, क्या तुमने पूरे हफ्ते साफ-सफाई का अच्छे से ध्यान रखा है?
हां प्रोफेसर, लेकिन लगता नहीं कि साधारण साबुन और पानी से बात बनी होगी। अब मुझे क्या करना है?

अब हम रेडियो एक्टिवेटेड हायपर डिटर्जेंट को टेस्ट करेंगे।
हुम्म...
ठीक है!

बेकी, क्या तुम्हें सचमुच लगता है कि यह एक अच्छा आइडिया है?
ओह, तुम भी न रॉकी। ज्यादा से ज्यादा क्या होगा? और प्रोफेसर ओडबोल इसके लिए मुझे 20 डॉलर* भी तो दे रहे हैं...
*1955 में 20 डॉलर की कीमत 2017 के 181.97 डॉलर के बराबर थी, तो यह बुरा नहीं है। (स्रोत= यू.एस. ब्यूरो ऑफ लेबर स्टैटिस्टिक्स)
उह, बेकी...
भरोसा रखो रॉकी, प्रोफेसर ने जानवरों पर काफी परीक्षण किए हैं और सभी सफल रहे हैं।
ठीक है, प्रोफेसर!

ग्रररररर
ररररररर
रॉकी !

ररररररर
धप्प!
रॉकी,
क्या तुम वह स्क्रीन खींचकर इसके सामने लगा दोगे ताकि बेकी को थोड़ी आड़ मिल सके?
उह, ठीक है।
ओफ्फ!

मैं तैयार हूं
प्रोफेसर!

नहीं,
पूरी तरह
नहीं।

ओह!

ठीक है, अब मैं तैयार हूं।

सचमुच हम भी। ओह, रुको, बस जरा एक चीज...

रॉकी, क्या तुम थोड़ी मदद करोगेज्

ओह, कोई बात नहीं।

ये किसलिए है,
प्रोफेसर?
हम अपनी
आज की पूरी कार्रवाई को
फिल्म के रूप में रिकॉर्ड
करेंगे, रॉकी।

मुझे यकीन है कि विज्ञान के
लिए यह एक महान दिन होगा।

आखिरकार मुझे वह
शोहरत मिल जाएगी जिसकी
बरसों से तलाश थी।
क्लिक!
किर्र
किर्र
किर्र

पैसे का कुछ
नहीं कहना!
गड़प!

ये तो
बढ़िया
हैं!
ओह!
लेकिन ये काम कैसे करेगा प्रोफेसर?
यह हायपर डिटर्जेंट रेडियो एक्टिवेटेड है।
बुलबुले ऊर्जा की तरफ आकर्षित होते हैं और सफाई कर देते हैं...

ऐसा लग रहा है कि ये छोटे-छोटे बुलबुले मुझे हर तरफ चूम रहे हैं...

यह अद्भुत है... ओह...

...मुझे गुदगुदी और थरथराहट हो रही है... ...ओह!...

धड़ाम!

...अद्भुत...
...ओह...इसे चलने दो...
...ओह मुझे काफी मजा आ रहा है...
उम्म...
आह...
ओह!...

ओह!
फचाक
उम्म...
फचाक
फचाक
मस्त...

फचाक
आह...अह अह हा!...
फचाक
यस... यस...

उह, प्रोफेसर क्या यह प्रयोग सचमुच इसी तरह किया जाना है?
शायद इसे अब यहीं रोक देना चाहिए।

खटाक

फ़वशशशश

❤ ओह! ❤

यहां हम पाठकों को बता दें कि इस बेहद जटिल और गंभीर परिस्थिति में अमेरिका की एक टॉप सीक्रेट सरकारी एजेंसी दखल देती है और प्रोफेसर ज़ोल्टन ओडबोल को कानूनी झमेले में पड़ने से बचा लेती है। हालांकि इसके बाद, अब प्रोफेसर को इस एजेंसी के लिए काम करना होगा।

...ओह यस!...
...ओह यस!...
...ओह यस!...

फवेशशशशश
...ओह यस!...

खैर, जनरल बुलशॉट, ये हमारा ४१ वां सब्जेक्ट था, इसका भी वही परिणाम हुआ।
डॉ. गोल्डफार्ब, कई बार मुझे ताज्जुब होता है कि क्या हम जो कर रहे हैं वह सही है?
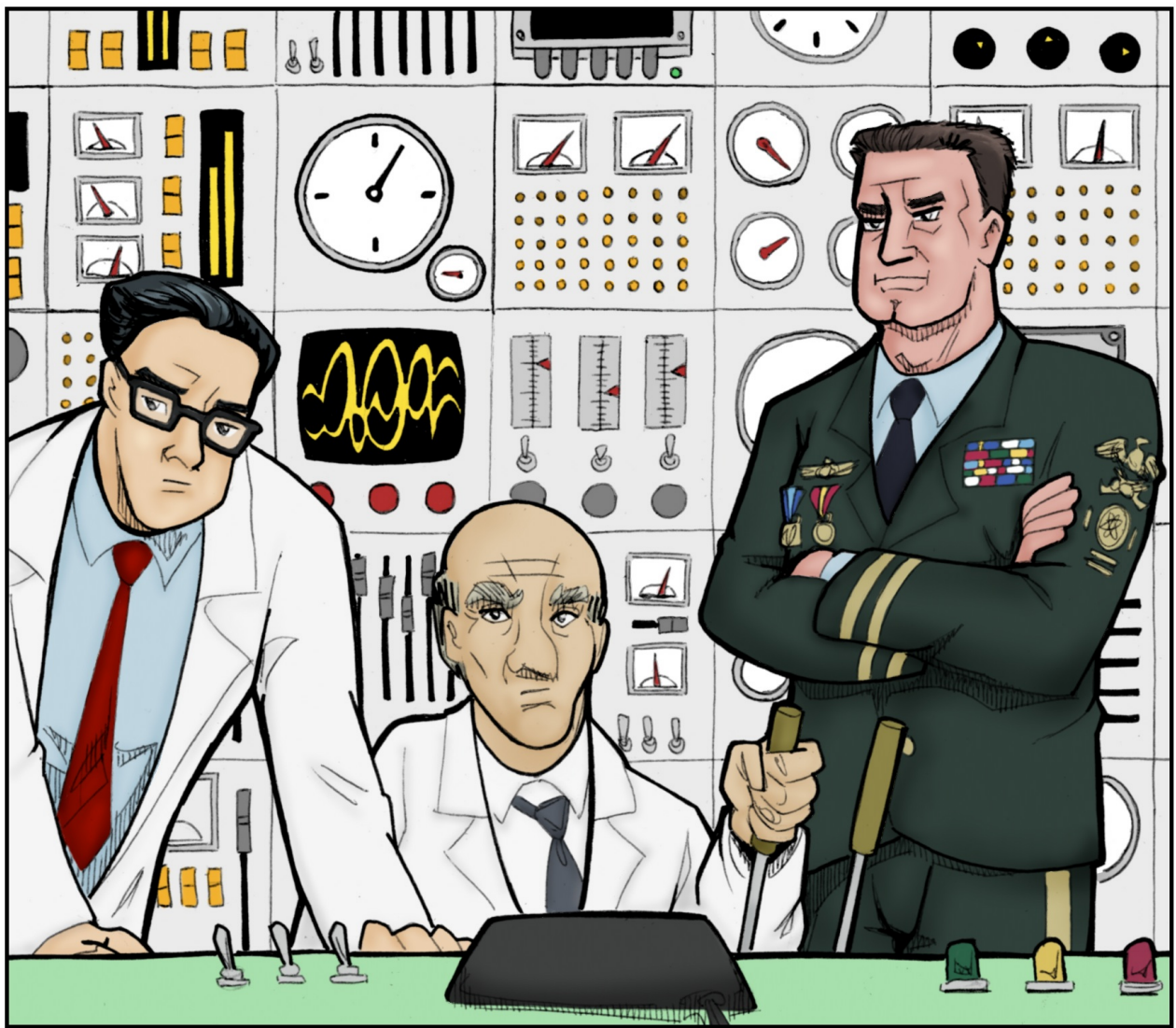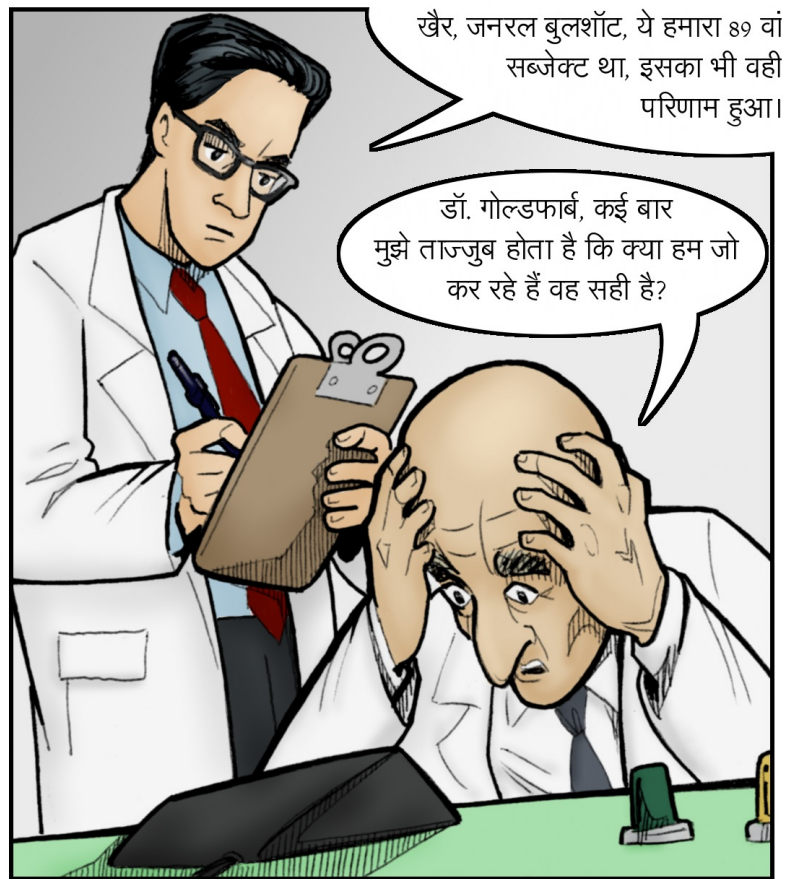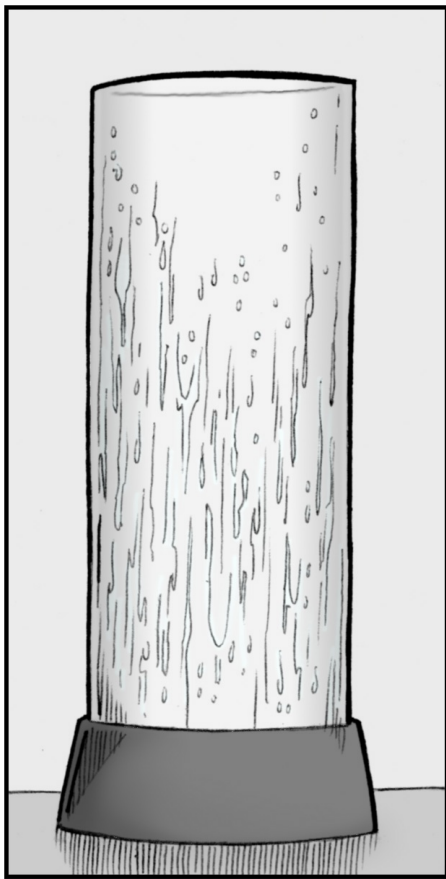
क्या बकवास है! जानते हो अगर कम्युनिस्टों ने हमसे पहले यह कर लिया तो क्या होगा... उनके पास एक अजेय हथियार हो जाएगा। वे उसका इस्तेमाल हमारी औरतों को गायब करने में करेंगे!
आजाद दुनिया की भलाई हमारे इस प्रयोग को जारी रखने पर निर्भर है।
धाड़!

मैने देखा है कि सैकड़ों नौजवान इस देश के लिए एंज़ियो और हर्टजेन के जंगलों में शहीद हो गए। उनमें से ज्यादातर रंगरूट ही थे।
स्वेच्छा से देश पर कुर्बान होने वाली नवयुवतियों को लेकर हमें ज्यादा परेशान होने की जरूरत नहीं है। उन्हें इस बारे में पहले ही सब-कुछ बता दिया गया था। ठीक है न गोल्डफार्ब?

उन्हें इस प्रयोग की उसकी प्रक्रिया के बारे में पूरी जानकारी दी गई थी, इसकी जरूरतें और इसके संभावित परिणामों के बारे में भी।
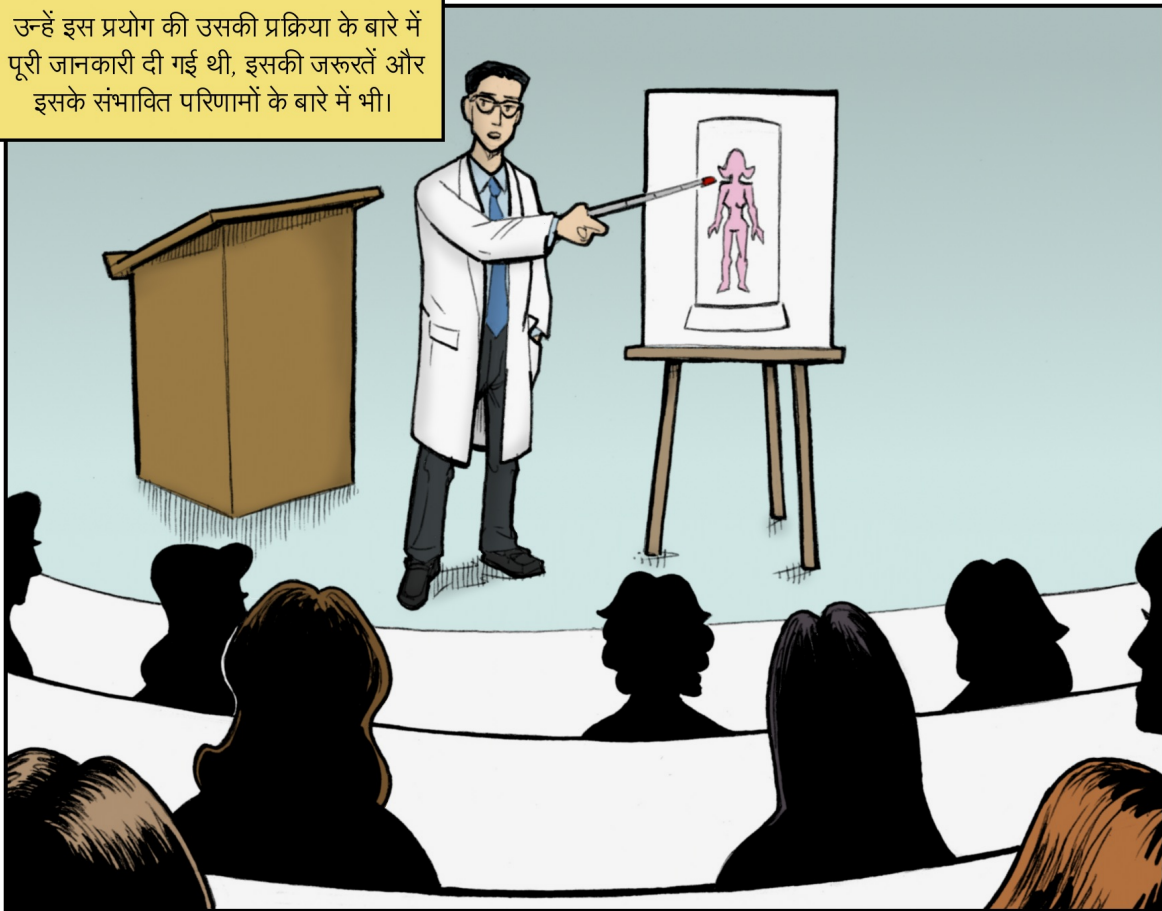
हम उन्हें इस कार्यक्रम की पूरी फिल्म रिकॉर्डिंग भी दिखाते हैं, इसमें प्रोफेसर ओडबोल का शुरुआती प्रयोग भी शामिल है।

वे कभी भी इससे पीछे हट सकती हैं, फिर भी हमारे पास इसमें शामिल होने की इच्छुक स्वयंसेवकों की कमी नहीं है।
वे तो बस आती रहती हैं...